11

किताबें और पर्यावरण

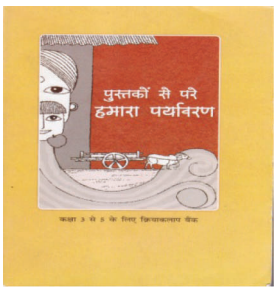

पुस्तक का नाम	–	*पुस्तकों से परे हमारा पर्यावरण*
प्रथम संस्करण	–	अगस्त, 2012
प्रकाशक	–	एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
मूल्य	–	₹ 385.00

मीनाक्षी*

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 बच्चों के स्कूली जीवन को बाहरी जीवन से जोड़ने का समर्थन करती है। पर्यावरण अध्ययन के विषय में यह शत-प्रतिशत सही है क्योंकि इसका ध्येय मात्र चेतना फ़ैलाना ही नहीं, बल्कि पर्यावरण के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक पहलुओं से जुड़ना और आवश्यक कौशलों का विकास करना भी है, ताकि उनसे संबंधित समस्याओं का समाधान भी हो सके। यह तब तक संभव नहीं है, जब तक बच्चे अपने परिवार से न जुड़ें। इसके लिए यह ज़रूरी है कि हमारी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया विभिन्न क्रियाकलापों के माध्यम से उन्हें भरपूर अवसर प्रदान करे, ताकि वे पर्यावरण से जुड़े मुद्दों की पहचान, उनका अपने रोज़मर्रा के जीवन पर प्रभाव जानकर न केवल जागरूक हों, बल्कि समालोचनात्मक चिंतन कर विभिन्न कौशलों द्वारा उन्हें सुलझाने के लिए समुदाय में अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करें। अत: प्राथमिक स्तर पर इसकी शुरुआत बच्चे के निकटतम परिवेश से होनी चाहिए। ऐसी शिक्षण प्रणाली से गुज़रकर ये बच्चे बड़े होकर किसी एक राज्य या देश के जागरूक नागरिक ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व के सुरक्षित भविष्य में योगदान कर सकेंगे।

इस दिशा में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित राष्ट्रीय फ़ोकस ग्रुप पोज़ीशन पेपर-आवास एवं अधिगम (Habitat and Learning) द्वारा कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाए जाने के सुझाव दिए गए हैं। इनमें शिक्षण की अपेक्षा अधिगम समालोचनात्मक चिंतन, स्थानीय विशिष्टता, समुदाय की भागीदारी, विभिन्न समानता एवं जेंडर-भेद के प्रति संवेदनशीलता तथा बहु-विषयी पद्धति द्वारा ज्ञान का सृजन करने पर बल दिया गया है। इन सभी बिंदुओं को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 ने स्कूली जीवन के हर स्तर पर बच्चों की आयु एवं अधिगम स्तर को ध्यान में रखते हुए विभिन्न विषयों द्वारा संबोधित करने की

*जे.पी.एफ़., प्रांरभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. नयी दिल्ली-110016

प्रस्तावना की है, जिसमें कक्षा 1 से 2 तक पर्यावरण अध्ययन को एक पृथक विषय और कक्षा 1 और 2 स्तर पर पर्यावरणीय कौशलों एवं सरोकारों को भाषा तथा गणित के माध्यम से विकसित करने का सुझाव दिया गया है।

इसके अतिरिक्त सन् 2000 से पर्यावरण को एक संपूर्ण प्राथमिक स्तर पर समेकित पद्धति से पढ़ाए जाने की सिफ़ारिश को जारी रखते हुए अधिक सशक्त बनाने की भी संस्तुति की गई है। इसके लिए सबसे बड़ी चुनौती थी-पाठ्यक्रम में प्राकृतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक पर्यावरण को समग्र रूप में देखकर उनका पारस्परिक तथा स्थानीय परिवेश से संबंध जोड़ना, ताकि चुने गए विषय, उपविषय तथा इन पर आधारित उपयुक्त अधिगम सामग्री का निर्माण भी इसी दिशा में हो। एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – 2005 के आधार पर विकसित पाठ्यपुस्तकें इसका एक महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। परंतु राष्ट्रीय फ़ोकस ग्रुप पाठ्यचर्या पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों (Curriculum Syllabus and Textbooks) से संबंधित पोज़ीशन पेपर के अनुसार ''एकमात्र पाठ्यपुस्तक ही आवश्यक नहीं है, अपितु आवश्यकता है एक शिक्षण-अधिगम सामग्री के पैकेज की, जो बच्चों को अधिगम में व्यस्त रखने का एक उपकरण हो सकती है। कक्षा में शिक्षक सीखने-सिखाने की विविध प्रकार की प्रक्रियाएँ , साकार अधिगम सामग्री तथा पाठ्यपुस्तकों का इस्तेमाल कर सकता/सकती है।''

शिक्षक के बिना संपूर्ण शिक्षण प्रणाली अधूरी है। ऐसे में शिक्षा की गुणवत्ता व अन्य सुधारों में उनके योगदान एवं सक्रिय भूमिका की अत्यधिक आवश्यकता है, जिसे पूरा करने के लिए वे सक्षम एवं समर्थ हों तभी वे नवाचारी, स्थानीय परिवेश एवं बच्चों के संज्ञान स्तर को ध्यान में रखते हुए बाल-केंद्रित शिक्षण-अधिगम के ऐसे अवसर चुन या बना सकेंगे, जिनसे प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सके।

पर्यावरण अध्ययन का शिक्षण—अधिगम प्रक्रिया को सुसाध्य एवं सार्थक बनाने के लिए प्रभावकारी अभिकर्ता के रूप में काम करने के लिए शिक्षकों को स्थानीय, नवाचारी, सक्रिय क्रियाकलापों, परियोजनाओं, क्षेत्र-अध्ययनों इत्यादि के द्वारा अपने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करने, बच्चों को पाठ्यपुस्तकों की दमनकारी निरंकुशता से छुटकारा दिलाने तथा 'पर्यावरण अध्ययन' से संबंधित सरोकारों एवं कौशलों को बच्चों की समझ एवं स्तर के अनुसार उजागर करने में शिक्षकों को सशक्त करना बहुत आवश्यक है।

उपरोक्त के संदर्भ में यह ज़रूरी है कि प्राथमिक स्तर पर बच्चों के परिवेश तथा अनुभवों पर आधारित विविध प्रकार की अधिगम स्थितियों का निर्माण या चुनाव करते हुए उपयुक्त माध्यमों द्वारा शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया का प्रयोग करना चाहिए। इसलिए 'पर्यावरण अध्ययन' के सुलभ अधिगम में शिक्षकों की भूमिका का विशेष योगदान है। अत: उनके लिए यह ज़रूरी है कि वे पर्यावरण संबंधी प्रत्ययों, सरोकारों, मुद्दों एवं प्रयासों को समझें, जिससे वे 'पर्यावरण अध्ययन' के वांछित उद्देश्यों की उपलब्धि करने में समर्थ हो सकें। इसके लिए ज़रूरी है कि शिक्षकों

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 61 28-12-2015 AM 11:56:57

के पास भिन्न-भिन्न प्रकार की सामग्री उपलब्ध हो, जिससे वे पुस्तकों के एकाधिकार को समाप्त कर बच्चों को उनकी आवश्यकता और संदर्भ के अनुसार उपयुक्त माध्यमों का चुनाव कर अधिगम के नए-नए एवं योग्य अवसर प्रदान कर सकें।

प्राय: शिक्षक इसके लिए अतिरिक्त संदर्भ-ग्रंथों अथवा सहायक सामग्री के अभाव में, स्वयं को प्रतिबंधित पाते हैं। पुस्तकालयों में मिलने वाली अधिकतर पाठ्य-सामग्री भी पाठ्यचर्या की आवश्यकता और संदर्भ से परे होती है, क्योंकि यह भारतीय परिप्रेक्ष्यों के अनुसार न होकर अन्य देशों से संबंधित होती है। पाठ्यपुस्तक इस पैकेज का एक भाग बनकर बच्चों को अधिगम में व्यस्त रखने का एक उपकरण हो सकती है। कक्षा में शिक्षक सीखने-सिखाने की विविध प्रकार की प्रक्रियाएँ , साकार अधिगम सामग्री तथा पाठ्यपुस्तकों का इस्तेमाल कर सकता/सकती है। अब तक हुए छोटे या बड़े स्तर पर कई नवाचारी कार्यक्रमों का बाह्य हस्तक्षेप के रूप में सफ़लतापूर्वक चलना भी इस बात का पूरा समर्थन करता है।

यह क्रियाकलाप इस दिशा में उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है। यह राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के आधार पर परिषद् द्वारा विकसित कक्षा 3 से 5 तक के पाठ्यक्रम पर आधारित है।

प्राथमिक शिक्षा के लिए एक एकीकृत परिप्रेक्ष्य गढ़ने हेतु कक्षा 3 से 5 तक 'पर्यावरण अध्ययन' की पाठ्यचर्या को विज्ञान, सामाजिक विज्ञान एवं पर्यावरण विज्ञान से निकालकर निम्नलिखित छ: विषय वस्तुओं की पहचान की गई है – 1.परिवार और दोस्त (संबंध, कार्य एवं खेल, जानवर, पौधे), 2. भोजन, 3. पानी, 4. आवास, 5. यात्रा, और 6. वस्तुएँ बनाना एवं सृजनात्मक कार्य करना। इन सभी के अलावा संपूर्ण एवं बहुविषयी विचार पर बल देते हुए , 'आवास तथा अधिगम पर दृष्टिकोण-प्रपत्र' (Habitat and Learning, Position Paper) विद्यार्थियों द्वारा पूरी की गई विभिन्न परियोजनाओं को सार्वजनिक 'वेबसाइट' पर प्रकाशित करके भारत के पर्यावरण पर एक व्यापक आँकड़ा-पटल बनाने के लिए बल देता है, जो कि भारत के पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं को समझने में सहायक सिद्ध होगा।

इस क्रियाकलाप बैंक की विशेष बातें इस प्रकार हैं –

- विभिन्न क्रियाकलापों की विषयवस्तु कक्षा तीन से पाँच के पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यचर्या पर आधारित है।
- हर थीम के अंतर्गत विकसित गतिविधियाँ बच्चों के बढ़ते संज्ञान स्तर के अनुसार विकसित की गई हैं।
- सभी क्रियाकलापों को कक्षा 3 से 5 तक के स्तर पर जटिलता के बढ़ते क्रम में व्यवस्थित किया गया है। लेकिन समय, परिस्थितियों, सामग्री आदि की सुलभता और उपलब्धता, बच्चों के परिवेश तथा सीखने की प्रगति के अनुसार यह क्रम बदला भी जा सकता है।
- इसमें प्राथमिक कक्षा के सभी स्तरों के पारस्परिक संबंधों का ध्यान भी रखा गया है।

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 62 28-12-2015 AM 11:56:57

- प्रत्येक शिक्षार्थी की ज़रूरत एवं परिवेश के अनुकूल बनाने के लिए इन गतिविधियों में पर्याप्त लचीलापन है।
- सभी क्रियाकलापों में अधिगम के ऐसे अवसर चुने गए हैं, जो कि बालकेंद्रित, विषय से संबंधित तथा सार्थक हैं। ये बच्चों के जिज्ञासु तथा खोजपूर्ण व्यक्ति को संपोषित करेंगे।
- यहाँ 'एक्टिविटी' या क्रियाकलाप का अभिप्राय केवल शारीरिक हरकत से न होकर हर उस कार्य से है, जिसमें बच्चे शारीरिक या फिर मानसिक रूप से सक्रिय होकर उस कार्य से अर्थपूर्ण ढंग से जुड़ें। ये सभी क्रियाकलाप प्राथमिक कक्षाओं के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा निर्धारित पर्यावरण पाठ्यक्रम के अंतर्गत दिए गए उप-विषयों (थीम) से संबंधित हैं और इन्हें इसी आधार पर वर्गीकृत किया गया है।
- हर क्रियाकलाप का तर्क और उसकी अपेक्षाएँ शुरू में ही स्पष्ट कर दी गई हैं।
- यह क्रियाकलाप न केवल महँगी सामग्री या उपकरणों आदि के बिना ही किए जा सकते हैं, अपितु इनमें आसानी से मिलने वाले स्थानीय उपलब्ध संसाधनों एवं सामग्री का इस्तेमाल करते हुए कक्षा से बाहर भी सीखने-सिखाने के अवसर सुझाए गए हैं।
- इन गतिविधियों को लिखने के ढंग में भी आपको विविधता मिलेगी, कहीं संवाद का प्रयोग हैं, तो कहीं कथा शैली की विषय सामग्री की भाषा सरल और सहज है।
- इनमें से कई क्रियाकलाप बच्चों के साथ किए भी गए और बच्चों की प्रतिक्रियाओं और बातचीत को भी कई जगह प्रतिबिंबित किया गया है। बच्चों के जवाबों, प्रतिक्रियाओं और विचारों को ध्यान से सुनकर और समझकर उन पर अपने शिक्षण-अधिगम को टिकाना एक महत्त्वपूर्ण कौशल है। उपयुक्त उदाहरणों द्वारा इस कौशल की ओर भी कहीं-कहीं संकेत किया गया है (उदाहरण 4.4 क्रियाकलाप)।
- क्रियाकलापों में तरह-तरह के रोचक तरीके जैसे- खेल, कहानियाँ, कविताएँ,साक्षात्कार, चर्चा, प्रयोग, प्रोजेक्ट का आयोजन करना-क्षेत्रीय परीक्षणों, क्रियाकलाप शीट तथा केस अध्ययन आदि पर आधारित हैं। सभी गतिविधियों में कला एवं शिल्पकारी के भी भरपूर अवसर दिए गए हैं।
- यह सभी अवसर बच्चों के संज्ञान स्तर का ध्यान रखते हुए उन्हें जाँच-पड़ताल, खोजबीन, प्रश्न एवं पूछताछ करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
- हर क्रियाकलाप शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में बच्चों की ही नहीं, बल्कि शिक्षकों की भी संपूर्ण भागीदारी को सुनिश्चित करता है।
- हर क्रियाकलाप बच्चों में जिज्ञासापूर्ण मानसिकता, अधिगम प्रक्रियाओं एवं सक्षमताओं को बढ़ाने में सहायक है।
- अपनी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सार्थक बनाने के लिए सभी क्रियाकलापों व गतिविधियों के प्रबंधन तथा संचालन में अधिक से अधिक बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करना ज़रूरी है।

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 63 28-12-2015 AM 11:56:57

- आकलन को शिक्षण अधिगम से अलग न मानते हुए एक ऐसी प्रक्रिया की तरह इस्तेमाल करें, जो न केवल उन बच्चों को प्रोत्साहित करे जो अच्छा कर रहे हों, बल्कि उन सभी को भी जो बहुत अच्छा नहीं कर पा रहे हों। हर बच्चे के पिछले काम की उससे अगले किए हुए कार्यों से तुलना करने पर उसकी प्रगति का अनुमान लगता है, जिससे आपको उनकी अधिगम प्रगति को आगे बढ़ाने के लिए उपयुक्त माध्यमों के चुनाव में सहायता मिलेगी।

विकसित क्रियाकलापों को कक्षा 3 से 5 के कठिनाई स्तर के अनुसार क्रमित किया गया है। अधिकतम क्रियाकलाप प्राथमिक शिक्षकों द्वारा अपनी कक्षाओं में बच्चों के साथ किए भी गए हैं। इसीलिए बच्चों की वास्तविक प्रतिक्रियाओं व अनुभवों को भी कई जगह शामिल किया गया है। इससे हमें बच्चों की सोच को जानते हुए अपने शिक्षण अधिगम को उनके अनुसार बनाने में मदद मिलेगी। सभी क्रियाकलाप केवल सुझाव मात्र हैं, जिन्हें बच्चों के संज्ञान स्तर, परिवेश एवं सामग्री की उपलब्धता के अनुसार करने/करवाने या इनमें फेर-बदल बदलाव करने के लिए शिक्षक पूर्णतया स्वतंत्र हैं। इन्हें करने/करवाने से पहले यह ज़रूरी है कि दी गई प्रस्तावना को शिक्षक ज़रूर पढ़ें। कक्षा में इन क्रियाकलापों को कराने से पहले यह जान लेना आवश्यक होगा कि ये सभी क्रियाकलाप केवल सुझाव मात्र हैं और आवश्यकतानुसार इन्हें संदर्भित करने या इनमें कुछ जोड़ने/घटाने या परिवर्तन करने का अंतिम निर्णय शिक्षक/शिक्षिका का ही होगा।

इस दस्तावेज़ की एक विशेषता यह भी है कि इसके अंत में संदर्भ ग्रंथों के साथ प्रमुख वेबसाइट के बारे में भी जानकारी दी गई है।

यह दस्तावेज़ क्रियाकलापों एवं परियोजनाओं की एक सार-संग्रह रूपी टोकरी है। इस क्रियाकलाप बैंक में दी गई गतिविधियाँ पर्यावरण अध्ययन के सरोकारों एवं कौशलों के विस्तार, शिक्षकों की दक्षता, कठिनाई स्तरों एवं समय की उपलब्धता को ध्यान में रख कर तैयार की गई हैं। ये सभी क्रियाकलाप राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के अनुरूप पर्यावरण अध्ययन के उद्देश्यों को कक्षा में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के द्वारा अभिकल्पित करने में सहायक हैं। 'पर्यावरण अध्ययन' में प्राथमिक स्तर पर इस क्रियाकलाप बैंक में क्रियाकलापों, परियोजनाओं तथा खेलों की विविधता द्वारा बच्चों को अधिगम के सुअवसर प्रदान करने के लिए यह दस्तावेज़ शिक्षकों एवं माता-पिता के लिए बहुत लाभदायक है।

❑❑❑

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 64 28-12-2015 AM 11:56:57